कबुलापाती

बनाम

शनिक साढ़ेसाती

—श्री अमर

इनकिलाब ! जिन्दाबाद !!

मरि-काटि, तोड़-फोड़, उठा-पटका हुड़दंग . . . .

समय- सन् चौआलिसक मध्य—

स्वतंत्रता संग्रामक आन्दोलनमे परताप बाबू सेहो सक्रिय रूपसँ भाग लेने छलाह। स्वतंत्रता संग्रामक अमर सेनानी बनबाक मोनमे आशा-अभिलाषा छलनि। पेशासँ मास्टर छलाह। गाममे सभ क्यो मास्साब-मास्साब आ क्या-क्यो अछरकटुआ माहटर साहेब सेहो कहि दैत छलनि। अपना माटि-पानिक दूध-घी पचा लेने छलाह जे देशभक्तिक छाहींसँ शरीर सदिखन धह-धह जड़ैत रहैत छलनि। राति-दिन, सुतलोमे लगैत छलनि जेना गान्ही बाबाक होहकार, करचीमे लत्ता बनि उधिया रहल अछि। सुतलोमे इनकिलाब-जिन्दाबाद करऽ लगैत छलाह दरबज्जापर सूतल पाहुन सभक निन्नमे धारा १४४ लागि जाइत रहनि। परताप बाबूक एहि क्रिया कलापक प्रभाव, सभसँ बेसी कोमल -सुकुमारमति बेटापर पड़ि जाइत छलनि— बुढ़वाके निन्नो नहि होइत छैक . . .

आ प्रारम्भ भऽ जाइत छल पिता-पुत्र संवाद। पिता कृष्ण ओ पुत्र अर्जुन! (समय: सन् बरासीक प्रारम्भ)

पिता (पुत्रसँ)—रौदक धाही लगने बिना अपने उठि नहि सकैत छी आ रातियो कऽ खूब विलम्बसँ सुतैत छी जखनकि गामक चौकीदार चिकरऽ लगैत अछि। ई अभ्यास ठीक नहि। स्वास्थ्य चौपट्ट भऽ जायत। बाउ, हम जखन अपनेक उमेरक रही त की कीनिकरैत रही। प्रात: उठि कसरत, मैदान। नित्य क्रियासँ निवृत्त भऽ पूजा-पाठ . . . मुदा अपने उठतहि काखलग टांजिस्टर दबौने रहै छी। अन्हरोखेसँ आयल इण्डिया बजऽ लगै अछि। राम-राम-राम! एहनो कतौ गाना-बजाना होइअय। उड़ि गेल राग-तान। . . . आब त . . . चल दरियामे डूब जाएँ! . . . .

पुत्र— (चाहक कप बढ़बैत) की होयत बड़-बड़ कयलासँ। लीयऽ . . . चाह पीबू आ कनियो खेत-पथारदिससँ टहलि आउ। मोन हल्लुक भऽ जायत। बड़का स्वतंत्रता सेनानी छी तँ कहाँ भेटै छ पेन्सन? जे असली स्वतंत्रता सेनानी रहै, तकरा सरकार दऽ रहल छै . . . छुच्छे फेफियायल फिरै छी। जखन हम सभ मरिये जायब तँ पेन्सनकी संजीवनी बूटी बनिकऽ जियाओत?

पिता—हमरा कोनो लोभ नहि ग्रसित कयने छल। इनरा गान्हीक भरोसे स्वतंत्रता आन्दोलनमे नहि कूदल रही? हृदयमे देशभक्तिक भावना छल। देश प्रमक प्राप्ति अपन उत्तरदायित्वक पालन कयल। एहि लेल नहि जहल गेल रही जे हमरा टाका-पैसा भेटत . . .

पुत्र—अहाँके तँ स्वतंत्रता सेनानीमे सरकार मोजरे नै दैत अछि तँ भेटत कतऽसँ? जेकरा भाग्यमे छै से पाबि रहल अछि। चानी काटि रहल अछि आ अहाँ थानासँ गृह मंत्रालय धरि कागजी घोड़ा दौड़ा रहल छी।

पिता—रौ, तो सभ तँ अपनामे कपड़-फोड़ी करबे . . पहिने हमरा मरऽ तँ दे!

पुत्र— अहाँ मरब नहि बाबू!

पिता— तँ जीबियेबऽ की इनार-पोखड़ि खुनायब? बेटा-बेटीक बियाह कराएब? जे जकरा फुरैत करै जाइजो . .

पिता लालका झण्डीसँ मोटका रुद्राक्षक माला फेरऽ लगैत छथि।

परताप बाबू! अपना समयमे संभवत: बड प्रतापी छलाह। तेँ परताप बाबू सभ कहैत छनि। मुदा किछु दिनसँ अस्वस्थ रहि रहल छथि। ई गप्प गामक किछुए लोक के बूझलि छैक। बड़का नेता-मिनिस्टर रहि-खैराती डायलिसिसक लक्ष्मण झूलापर झुलैत जीवनक अन्तिम साँस लऽ लिलथि। खैराती अस्पतालक हालति देखि पहिनहि मरि जाइक इच्छा प्रबल रूप धारण कऽ लेल ठोकऽ लगैत छनि।

पुत्र हृदय सदिखन एहि प्रयासमे रहैत छथि जे कहुना बुढ़बा एहू जाड़मे छनि जाय जे पेन्सनक कागत आगू बढ़ऽमे कोनो तकलीफ नहि होअऽ।

ओना परताप बाबू परतापी चेहरा देखलासँ बीमार नहि बुझना जाइत छथि किएक तँ माउस भरल देह। एकको टा केस एखनधरि नहि तिलबल छनि। मुहक दाँत ओ पेटक आँतक मजगूती एहिसँ बूझल जा सकैत जे जलखैमे भूजल बदाम एकनहू पक्की सेर भरि पचा जाइ छथि। बयस पचहत्तरिसँ ऊपर जा रहल छनि। किछु दिन धरि जीबाक भयंकर व्यामोहसँ ग्रसित छलाह मुदा आब जेना वैराग्य आबि गेल छनि।

भगबानक परतापसँ धीया-पुता, नाती-परनाती आ छरनातीसँ आँगन दल-मल करैत रहैत छनि। बेटा मात्र दू टा- एक गोट किरानी तँ दोसर कल्लड़। कल्लड़ मने, बेरोजगार छथि। एखनधरि बेरोजगारी भत्ता सेहो नहि भेटल छनि। ब्लौकमे कोनो किरानीक चपेटमे पड़ि गेलाह! कहलकनि— आपको नहीं मिलेगा! फारम गलत है।

कल्लड़ बाबू पूछि देलथिन—से किएक? एहेन घोर जुलुम किएक?

पता लगलनि जे पाँच सालसँ इम्प्लाइमेंट एक्सचेंजमे जकर नाम पहिने

समाजक दाम्पत्य जीवन खतरामे पड़ि गेल छैक। ओतुका मातत्व नष्ट भऽ रहल छैक, पत्नीत्व नष्ट भऽ रहल छैक, ओतुका कौटुम्बिक जीवन प्राय: समाप्त भऽ गेल छैक। गृह नामक आकर्षक वस्तु ओतऽसँ नस्तनाबूद भऽ रहल छैक। ओतुका समाज गह आ गहलक्ष्मी नामक दूनू जीवन-प्रदायिनी, वस्तुसँ वंचित भऽ गेल अछि। भविष्यमे मानव समाजक विकास पौरुषीय सभ्यतासँ नहि किन्तु स्त्रियोचित सभ्यताक उन्नतिसँ होयत। समाजक स्टैण्डर्ड जे कि बिराट भावनाक संचालक अछि बहुत शीघ्र बदलत। जखन आर्थिक दृष्टिसँ स्त्री आ पुरुष एक दोसरा पर अवलम्बित नहि रहत तखन, ने प्रतिस्पर्धा रहतैक आ ने मालिक ओ गुलामक भावनाक अस्तित्व। तेँ समाजमे दाम्पत्य जीवनक रक्षाक हेतु आवश्यक अछि जे समाजक वातावरण पूर्णतया समताक भावनासँ पूर्ण हो। ओहिमे स्त्री ओ पुरुष पूर्ण स्वतन्त्र रहैत सहयोग आ प्रेमक संग वैवाहिक जीवनकेँ सम्पन्न करथि। दुनू गोटे अपन अपन कर्त्तव्यक सम्बन्धमे दक्ष रहथि तखन समाजमे शान्ति आर प्रेमक धार बहत।

ग्रा०-न्यूहरिपुर पो० गुरमहा जि०- मधुबनी

Scanned with CamScanner

रहल छलै, मात्र तकरे टा ई सुविधा देल जाइत छैक। बेचारेक करम तेहेन छलनि जे भागैत भूतक नगोटी तक नहि पकड़ि सकलाह।

परताप बाबूके जखन ई गप्प पता लगलनि तँ खिसिया गेलाह,—एना कतहु काज होइ छै। किरानी बाबू मनें बकड़ी के जिम्मड़िक पात दियौ। स्वतः मेमियाय लागत। काज ततेक तेजीसँ चलऽ लागत जेना जयन्ती-जनता गाड़ी चलैछ।

करमघट्ट कल्लड़ बाबूके जिम्मड़िक पातक अर्थ नहि बुझना गेलनि। परताप बाबू अपना जमानाक खेलल सत्य-अहिंसाक पुजारी। घूसदें बला गप्पक समर्थनमे पुनः किएक बजताह।

गाममे जमीनक कोनो कमी नहि रहनि। खेती-बारी जँ नीक चलय त नौकरी करब महान पाप थिक—यैह बूझि माटि-पानि देहमे लगौलनि तँ भरि पोख दाना पानी मे कसरि नहि होइत छनि।

परताप बाबू मुखियामे ठाढ़ भेलाह। नबका छौंड़ा सभ विरोधक देवाल ठाढ़ कऽ देलकनि। विरोधक ओहि नम्हर देवालकें परताप बाबू फानि नहि सकलाह। डीलर, मखिया, सरपंच सभ कदाचारक झंडा बुलन्द करऽ लागल। मुरदा गामक मुरदा लोक। क्यो प्रतिकारमे ठाढ़ नहि भऽ सकल। परताप बाबूके किछु व्यक्ति गामक एहि सभ गतिबिधिसँ परिचित करौलनि। सभ गप्प सूनि निराशा परताप बाबूक मुँहसँ बहरा गेलनि— साधो, ई मुरदनकेर गाम !

स्वस्थ-सानन्द जीवन व्यतीत करऽ बला परताप बाबू चारिम अवस्थापार करैत करैत पकड़ा गेलाह। चेकपोस्टपर कलिक देव ठाढ़ छलथिन। आशीर्वाद देलथिन आशीर्वाद फलीभूत भेल—परताप बाबू बीमार पड़ि गेलाह। बीमारी मामूली सर्दी खाँसीसँ प्रारम्भ भेल छलनि ते ई आशा छलनि ज ममूली खानपानक सुविधासँ स्वस्थय भऽ जयताह। मुदा ई नहि भऽ सकलैक ततेक कमजोर भऽ गेलाह जे र कखन खाटपर सँ खसि पड़ताह तकर डर सदिखन घरबलाके बनल रहैत छलैक। ग्रसैक डरसँ परताप बाबू अपनहि सतर्क छलाह। खूब नीक जकाँ खाटक पउआ-पाइस धऽ लेलनि। खाट जिनगीक अन्तिम आधारपर बनि गेलनि। दबाइ, पथ्य कुड़ूर, आचमनि, पैखाना-पैसब सभ खाटहि पर। बाहर अयनाइ-गनाइपर घरवाला तमादी लगा देने छलनि। डा० त प्रति-बन्ध कइये देने रहनि, अपनहुँ—शरीरके एहि सभ कार्य लेल उपयोगी नहि बूझि रहल छलाह।

डाक्टर, हकीम, वैद्य सभक इलाज चलऽ लगलनि—कोनो फायदा नहि। झाड़-फूक, टोना-तंतर अन्तमे पूजा-पाठ पर आ हवन कयल गेल। महीन चण्डी ब्राह्मण द्वारा महामृत्युजय जाप कराओल गेल—प्रतिफल किछु नहि। मामली फोसड़ी, भोकन्नड़ बनि गेल छलि। आधा-छिधा रुप मे ई समाचार गाममे पसरि गेल। लगलै जेना बोनमे बीमारीक समाचार पसरतहि आगि लागि गेलैक। आगन्तुकक चरण-रज सँ आंगन निपा गेलनि। खोज-पुछाड़ि छुच्छ भारसँ आंगन भरऽ लागल।

ज्वरक बाढ़ि १०५डिग्रीसँ कम होइत ९९डिग्रीपर स्थिर भऽ गेल छलनि। स्वस्थ्य मे क्रमिक सुधारक समाचारसँ अपनहि लोक बसी खखोड़य लागल छलनि। परताप बाबू मोन घोर भऽ गेल रहनि— ई कोन शनिक साढ़े साति लागि गेल से नहि जानि। किरपा महादेवक !

परताप बाबूक बढ़ी हनुमानजीक परम भक्त छलथिन। ओ एक दिन महावीर जीक इलाज मे एकटंगा दऽ ठाढ़ भेलाह आ शुद्ध घीक पाँच किलो लड्डू कबुला कयलनि जे कहुना बुढ़ा स्वस्थ तँ भऽ जाइथ। बुढ़ीक देखा देखी धर्माचरणक अभियानमे बेटी-पुतहु सभ हिस्सा लेलनि। कल्लड़ बाबूसे महादेवक भक्त लोक ! पूरा एक पौआ भांगक गोला दऽ प्रमसँ कबुला कयलनि जे हे पार-समणि महादेव ! जँ बाबू ठीक भऽ जयताह त अपनेकें गगोत्रीक जल आनि बोझब। छटगर नाती सभ अपन अनुपातमे छोट-मोट कबुला कऽ देने छल।

गामक मुखिया जी परताप बाबूके बड़ मानैत छलथिन। कतेको बेर ब्लौक सँ सिमेन्ट, गहुम आ खाद दिया देने रह-थिन। मटिया तेलक तँ बाते नहि पूछू—कतेको टीन गामक डीलरसँ दिया देने छल-थिन, तकर हिसाबे नहि रहै। एक दिन दुर्गास्थान जाइ काल, दुर्गामैयाकें गछि लेलथिन-- हे माता दुर्गा ! परताप बाबूक दुख हरि लीअ ऽ...दुर्गापूजा अबिते अछि। एक जोड़ छागड़ बलि चढ़ायब।

एहि प्रकारे देवलोकमे कबुला-पातीक संचिका बेस मोट भऽ गेल। देवलोकक लाल फीताशाही एहि प्रकारक कबुला-पातीकें स्वीकृत्यर्थ मानि लेलक। स्वास्थ्यमे भ्रष्टाचारक गतिसँ (बिजलीक गति होय-बाक चाहैत छल मुदा बिजली विभागक अकर्मण्यतासँ विद्युत गतिसँ, सुधार होमऽ लागल।

परताप बाबूक कानमे जेना गुप्तचर विभागक ट्रांसमीटर फिट छलनि। हुनका एहि तरहक सभ गतिविधिक जानकारी यथासमय प्राप्त होइत रहैत छलनि।

अचानक देवलोकमे संचिका भ्रमास्पद स्थितिमे लम्बित भऽ गेल। देवादिदेव महादेव संचिका टर्न डाउन कऽ विभागीय अधिकारी लग पठा देलथिन।

परताप बाबूक बीमारी अपन तेसरे रुप धारण कयलक। जानो बाँचब मोश्किल भऽ गेलनि। गामक दाइ-मायक नाम फरमान जारी भेल जे ओ लोकनि आँगनमे प्रवेश नहि करथु। जादू-टोना प्रभाग एहि एहितियाती काररवाइसँ सजग भऽ गेल। डाइनक प्रकोपसँ मुक्ति दियौनिहार ओझा-गुनी चानी काटऽ लगलाह। किछु दिन धरि यैह रंग-ताल मचैत रहल। पाइ पानि भऽ गेलैक। आँखिक निम्न प्रकाश चढ़ि गेल। सभ खरच-वरच कोना चलि रहल छैक ताहि सभ क्रियासँ परताप बाबूके फराक राखल गेलनि।

अन्तत. किरानी बाबूकें पटना तार कयल गेल— आन डेड बेड, कम सून-फ्रीडम फाइटर परताप।

तार पबितहि किरानी बाबू पंचसाला योजनाक समस्त कमाइ बैगमे कसिकऽ पिताश्रीक अन्तिम दर्शनार्थ पहुँच गेलाह। सोचलनि—पाइ तँ चिक्कन कमइते छी, मुदा बापक सेवा नहि कऽ सकलहुँ। गोलोक-वासी भेलासँ पूर्व ओहि पुण्यात्माक दर्शन अवश्य कऽ लेबाक चाही। कनियाँ ओ कनियाँक समस्त धीया-पूताकें बटोरने चलि आयल छलाह।

रातिमे निन्नमे भेर पिताश्रीकें जगो-नाइ अनुचित बुझना गेलनि। दर्शनक प्रोग्राम भोरमे राखल गेल।

घर-आँगन महासम्मेलनक अखाड़ा बनि गल छल। घरमे परताप बाबू अगिया-बेताल जकाँ लह-लह करैत छलाह—सक रहितनि तँ पपियाहा सभके लाठीसँ डेंगाकऽ भगा दैतथि। मुदा शक्तिहीन छलाह। स्वयं पराजीत। खाटपर कछमछा कऽ रहि गलाह। डरसँ क्यो घरमे प्रवेश नहि करैत छलनि। अन्तत. रोगशय्यापर पड़ल राजा दशरथ जकाँ; अपन रामक प्रतीक्षामे, आखिक कालीन बिछौने देखि किरानी बाबू परम श्रद्धासँ चरण-स्पर्श कऽ पूछि देलथिन— आब कहू, मोन केहन लगैए !

परताप बाबू नाजिर हुसैन जकाँ आँखिसँ नोर खसयबाक कलामे निपुण छलाह से अपन कलाक प्रयोग-स्थल पाबि अश्रुपात करऽ लगलाह।

पुनः किरानी बाबूक संग पटनासँ आयल डाक्टर अपन आला बहार कयलक। परताप बाबूके लगलनि जे ई डक्टरबा आब हमरा भाला भोंकि देत। यैह क्रिया टा बाकी अछि। आला भिड़ौलासँ पूर्व डाक्टर प्रश्न कयलथिन—कैसी तबियत है ?

परताप बाबू अपना जमानामे ड्रामा पार्टमे सेहो नटुआ बनैत छलाह। अपन द्विअर्थी संवाद प्रेषित कयलनि— आब लगता है कि मरिये जाये !

(शेष पृष्ट २३ पर)

आ छपाइ इत्यादिक माध्यमसँ सेहो काज कयलनि। ओ 'एचिंग' कऽ अपन पुरनका सहपाठी 'रिकार्डो कानाले'सँ सिख लनि। रेम्ब्रान्डटक बाद, पिकासोक एचिंग या खुदाइक काज बहुत ठोस छनि।

सन् १९६८ ई० क मार्चसँ अक्टूबर महीनामे, पिकासो तीन सौ सैंतालिस नक्काशी या एन्ग्रेविंग कयलनि, जाहिमे रत्यात्मक या 'टेराटिक' मोटिफ अपन अंतिम चरण पर अछि।

पाब्लो पिकासो पेरिसक विश्वशांति सम्मेलनक लेल लिथोग्राफी माध्यमसँ काज कयलनि, जे 'पीस आफ दोव'क नामसँ ख्यात छैक।

'द पेंटर एंड हिज मॉडेल' शृँखलाक चित्रमे कलाकारक दायित्व, ओकर व्यक्तिगत जीवन आ ओकर कठिनाइकेँ पिकासो दर्शौलनि अछि। जाहिसँ प्रत्येक कलाकारकेँ कलाक सृष्टि करबाक समय गुजरऽ पड़ैत छनि।

फ्रेंच लेखक जीन कामट्यूकक आग्रह पर पिकासो बैलेट कम्पनीमे भाग लेलनि आ नाटकक मंच सज्जाक लेल रेखांकन कयलनि। हुनका बैलेटे कम्पनीमे पहिल पत्नी ओल्गा कोकोलोवासँ सेहो भेट भेलनि।

पाब्लो देशक तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ कऽ, ओहूमे भाग लेलनि आ 'कम्यूनिस्ट पार्टीक सक्रिय सदस्य सेहो भेलाह। ओ स्पेनक—'ल हुमानिते' पत्रिकामे लिखलनि'—सम्पूर्ण जीवन हम क निष्ठावान क्रान्तिकारिक भाँति, अपन चित्रकारीक संग संघर्ष कयलहुँ। किन्तु हम अनभव कयलहुँ जे इहो यथेष्ठ नहि। किछु बरखसँ चलि अबैत रहल संघर्ष हमरा रस्ता देखोलक जे खाली चित्रेसँ नहि, सम्पूर्ण मानव जातिसँ संघर्ष करबाक चाही। राजनीतिक जीवनक महत्त्वपूर्ण काज मास्सक्रे इन कोरिया, वार एंड पीस इत्यादि अछि।

पिकासोक चित्रकारीके नील युग या ब्लु पिरियड आ गुलाबी युग या रोज परियड मे विभक्त कयल जाइत अछि। नीलयुग आ गुलाबी युग मे विभक्त करबाक कारण ई अछि जे नीलयुगीन चित्रकारीमे नील रंगक प्रभाव प्रबल अछि आ गुलाबीयुगक चित्रकारीमे गुलाबी रंगक प्रभाव प्रबल अछि। नीलयुगक चित्र—टू सिस्टर्स, ए एबान्डोन्ड, कालेस्टिना, द ओल्ड गिटारिस्ट इत्यादि अछि आ गुलाबी युगक चित्र—द डैथ आफ हारलेक्वीन, फेमिली आफ एक्रोबोट्स विद माकी इत्यादि अछि। नीलयुगक चित्रमे रोमान्टिसिज्मक प्रभाव अछि। गुलाबी युगमे पिकासो क्लासिकल युगक विषयवस्तुकेँ नया ढंगसँ रखबाक कोशिश कयलनि। गुलाबी युगमे गुलाबी रंगक प्रभाव होयबाक, दोसर कारण नाटक कम्पनीमे काज केनिहार लोकक रंग-विरंगी साज-सज्जा अछि।

पिकासो शांत प्रकृतिक व्यक्ति लोक सेहो छलाह। हुनका एकान्तवास नीक लगैत छल। जाहि समय, ओ वार एंड पीस क अंकन कऽ रहल छलाह ताहि समय ओ सवदा अपन घरक किवाड़केँ बंद रखैत छलाह। ओहि कारणे, ओ जीवनक अंतिम प्रहरमे शांत चित्तसँ जीवन व्यतीत करबाक लेल मागिन्स नोवे-दामे-दे वी चलि गेलाह जतऽ हुनक देहावसान ९२ वर्षक अवस्थामे सन् ८ अप्रैल १९७३ ई० कऽ भऽ गेलनि। हुनक देहावसानक बाद हुनक सम्पत्तिक मुल्यांकन ५०० लाख पाउण्ड कयल गेल।

पिकासोक जीवन बहुत अस्त व्यस्त छल। ओ लगभग सभ युरोपीय-देशक यात्रा कयलनि। एहि यात्रासँ हुनका अनुभव करबाक मौका भेटलनि। किन्तु ओ कतहु वेसी दिन धरि नहि रहलाह। वैह स्थिति हुनका पारिवारिक जीवनमे सेहो भेलनि, ताहिलेल हुनका पाँच पाँचटा व्याह तक सेहो करऽ पड़लनि। किन्तु पिकासोकेँ कोनो दिन आर्थिक कष्ट नहि रहलनि।

पिकासोकेँ कलाकार रूपमे प्रतिष्ठित करेबामे पेट्रो मनाक बहुत मदद करलथिन। मनाकेँ पिकासोकेँ बर्थ वाइलसँ परिचय कराओलथिन जे हुनक चित्र पहिने-पहिने खरीदलक। मनाके पेरिसमे अम्ब्रोइस बोल्लाईसँ अपन दीर्घामे, पिकासोकेँ चित्र प्रदर्शनी करऽ लेल कहलथिन।

एहि प्रकार देखल जाइत अछि ज एक समीक्षक पिकासोकेँ सचमे शिल्पकलाक इतिहासमे पैगम्बरक शंज्ञा देलथिन अछि। पिकासो अपन जीवनकालमे चित्रकारी, मूर्तिकला, रेखांकन, खुदाई, नक्काशी, छपाइ, कोलाज इत्यादि मिलाकऽ लगभग बीस हजार कलाकृति कयलनि।

कुमार सदन, रतनपल्ली शांतिनिकेतन—
७३१२३५ पश्चिम बंग।

(पृष्ठ १९ क शेषांश)

उपस्थित जनसमुदाय एक-दोसर गोटाक मुँह ताकऽ लागल। किरानी बाबू मोनहि मोन सोचलनि पूज्य पिताश्री फ्रीडम फाइटर होकर ऐसी अनाप-शनाप बाते क्यों कह रहे हैं? धड़ाकसँ पूज्य पिताश्रीक चरण पकड़ि लेलनि—हे पिताश्री! अपने मद्रासी फिल्मक अश्रुधारामय संवादसँ हमरालोकनिक कोमल करेजक शल्यक्रिया किएक कऽ रहल छी?

परताप निचित गम्भीर मुद्रामे दिलिप कुमारक अन्दाजमे बजलाह—नहीं किछु होइए हमरा....हमरा किछुओ तँ नहि होइ-ए। हम तँ चिन्तासँ ग्लान भऽ रहल छी!

"कि एक पिताजी?" समवेत स्वरमे उत्कण्ठाक इजोत जागृत भेल।

समाधानमे परताप बाबू बजलाह—फिल्म अंगरे लम्बा भऽ रहल अछि। जल्दीसँ दी एण्डक बर्लिन लगाबह नहि तँ फिल्म दुखान्त भऽ जयतह, माने हम सते मरि जायब। कतऽसँ एतेक कबुला-पाती हम पूरा करबैक? कबुला कयनिहार ते कात भऽ जायत, ई पाप भरि जिनगी हमरा खायत। ज अपन डीह-डाबर सभ निलाम पर चढ़ा दी तैयो की हम कबुलापाती सभ पूरा कऽ सकब? सभ गोटासँ पूछि लियऽ जे कतेक कबुला पाती कयने छथि। ई कबुला-पाती नहि थिक, साक्षात शनिक साढ़े साती चलि रहल अछि हमरापर... आब जँ हम जीवियो जायब तँ हमरा मुइले बूझल जाय....।

परताप बाबू उठि-पुठि कऽ बैसि गेलाह—सुनै जाइ जाउ...कबुला-पाती कयनिहार जतेक लोक छी, कान फोलिकऽ सूनि लियऽ जे हमरासँ अभिमत लेने बिना ई संकल्प कयल ते एकर प्रामाणिकता सिद्ध नहि भऽ रहल अछि—हम एहि तरहक कबुला-पातीकेँ विखण्डित करैत, भविष्यमे गम्भीर रूपसँ बिमार पड़निहारसँ पुछने बिना संकल्प करबाक मान्यता नहि प्रदान करबाक अपन प्रस्ताव अनुमोदनार्थ रखैत छी। जँ सर्वसम्मतिसँ हमर प्रस्ताव मानि लल जाइत अछि त बेस, नहि तँ हमरे खाटकेँ कान्हपर उठाकऽ लऽ चलू आँगन, जतऽ तुलसीक चौड़ा अछि...।

कबुला-पातीक चाकपर घर-आँगन नाचऽ लागल छल। बूढ़ी अपन बिरदावलीक संग बूढ़ाक सोझाँ ठाढ़ छलीह। परताप बाबू खौंझा उठलाह—

वृद्धकान्या! आब मोहभंग करू। अहाँक भाषण सुनबाक पखड़ति नहि अछि हम। मृत्युलोकमे हमर मृत्युक नोटिफिकेशन भऽ गेल अछि। एकरा स्टे करौनाइ अपनेलोकनिक अक्षयशक्ति सँ बाहरक गप्प थिक...हमरा मरऽ दियऽ... कबुला-पातीक समस्त खच-बचँसँ बचैक आर कोनो वैकल्पिक प्रावधानहि अछि....

दोसरहि क्षण परताप बाबू कबीरपंथी बाबा बनि सस्वर गाबऽ लगलाह—
'साधो ई मुरदन केर देश,
कबुला-पाती केर चक्करमे
पड़ि गेल भारी क्लेश!
साधो ई मुरदन केर देश!!

ग्राम-पो०-रहुआ संग्राम मधेपुर, मधुबनी।

Scanned with CamScanner

आधुनिक मर्यादा पुरुषोत्तम

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्रतियोगिता परीक्षामे चुन्नू सम्मिलित भेला कय खेप ।
...छाँकेर पकलाहा आमनेर सुतरि गेलनि जा तेसर ढेप ॥
...डिकलक विद्यार्थी बनला नाम लिखौलनि टाटा जाय ।
...एसँ भूखन भैया सोचऽ लगला घाटाक उपाय ॥
...वा सरिसो तेल लगाकऽ देथि मोँछपर नित्तह ताव ।
बोआकेर दाम तँ बढ़बे कयलनि, चढ़ते हमरो भाव ॥
...स सयक सलाना निजगुत तकर अलावे पाकिट खर्च ।
...रख धरि जुटबय पड़तनि, करथि सबहि ठाँ एकरे चर्च ॥
बैसल-बैसल एकसरमे भूखन भैया मनमोदक खाथि ।
...सँ आसिन मासक पाड़ा जकाँ मोटायल जाथि ॥
...केँ तोड़ि.एहि ठाँ बान्हब पक्का पैघ दलान ।
...एना करब आ ओकरा ओना करब, से बनबथि प्लान ॥
...क बदलामे अपने भने लगाबथु औँठा छाप ।
मुदा पाँच बरखेक बादसँ कहबोता डाक्टरकेर बाप ॥
जागलमे सोचथि से उचिते, सुतलोमे एतबे सपनाथि ।
गर्मी तते बढ़ल जाइनि जे पूस माघमे सेहो भफाथि ॥
चुन्नू देखबामे चन्ना सन आ दस बीघा आस्था-पात ।
...हजारक मोल रहल की? करब लाखसँ उपरे बात ॥
कारक छड़ो सन कनियाँ आनब आ बिदाइमे मोटरकार ।
घरमे बैसल टेलीवीजनपर देखब सगरो संसार ॥
मनोरथक] तँ पूल नर्मरि कऽ महासेतुओसँ बढ़ि गेल ।
...र्गक सोढ़ी लागल लगमे लागय लगलनि अपना लेल ॥
धैर्य धारि, कछमछ करैत ओ खेपलनि कहुना पाँचो साल ।
कन्यागतक घटक सभ परिचयदेथि न जाथि लगौने घरमे टाल ॥
...नम्बर धन्धी समाजमेसँ क्यौ भेटलनि यजमान ।
जे निधोख भऽ एहन काज ले' टका बहाबथि पानि समान ॥
चुन्नू पौलनि तार गामसँ—'जहिना छी तहिना चल आउ ।
मैयाँ अब-तब कऽ रहली अछि आबि अपन मुँह कने देखाउ' ॥
चुन्नू टाटामे पढ़ैत ततबा छल प्रगतिशील भऽ गेल ।
कऽ देलकनि भूखन भैयाकेर अपन बनाओल प्लाने फेल ॥
...क संघमे टका गनयबाकेँ कहने छल अपने रोग ।
ताहि रोगसँ ग्रस्त करक हित पिता लगौने छलथिन योग ॥
मैयाँ आङनमे अरिपन दऽ करथि चुमानक सभ ओरियान ।
अबतब की करइत छथि मैयाँ जइते भेटलनि तकर प्रमान ॥
...खि तहिँ भूखन भैया हुनका बरियाती ले' देल हकार ।
जुटल लोक, चुन्नूकेँ लगलनि जेना हँसेरी हो तैयार ॥

कन्यागतक घरक कोड़ो धरि घीचि जेना आनत सभ लूटि
काँझ होइत धरि गाम गामसँ गेलथिन सकल कुटुम्बो जूटि
भरल सभामे बाजल चुन्नू—'सुनइत जाउ समाजक लोक ।
टका गनयबापर लागल छै' कानूनन सरकारी रोक ॥
हमरे संग पढ़ै [छथि निर्धन मित्र हमर जे परम अभिन्न ।
तनिक पिताके कन्यादानक चिन्तासँ देखल अति खिन्न ॥
हुनक देखि दयनीय दशा, भऽ द्रवित वचन हुनका दऽ देल ।
करब विवाह ओतहि हम सेहो मनहि मनहि निश्चय कऽ लेल ॥
अपन बुद्धि विद्याबल अर्जब देबनि पिताक मनोरथ पूरि ।
किन्तु टका गनबाय समाजक बीच करथु नहि हमरो दूरि ॥
जखन धनुष तोड़ल बिनु पुछनहि मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
तखन हमर निश्चय नहि अनुचित कहिकऽ चुन्नू लेलनि विराम ॥
सुनक बात सुनि भूखन भैया खसला चारु नाल चित्तंग ।
चन्नू चलल विवाह करक हित मात्र चारि बरियाती संग।

आधार

श्रीअमर

चेहरा तामससँ ऐंठि-पचकि कऽ जिलबी जकाँ भऽ गेल रहैय। बुझा पड़ैत छलै, जेना एहिसँ पूर्वो ओ एहि आफिसक किरानीकेँ आत्मसात कऽ चुकल अछि।

मुदा किरानियो बाबू कम अखड़ियल नहि छलाह। ओकरा ततेक टल्ली देने रहथिन जे सगर डाँड़-पीठ ऐंठि गेल रहैक। दौड़ैत-दौड़ैत एहि तीन दिनक गँजन ओकरा परपितामहसँ भेंट करा देने रहै तथापि ओ घमायल नहि रहय।

पूर्व नियोजित कार्यक्रम जकाँ अबिते किरानी बाबूसँ भिड़ गेल।

एहन बुन्नो-पाथर किरानी बाबू कतेको बेर सहि चुकल छलाह तेँ चेहरापर प्रतिक्रियाक भूत-पिशाच नहि नाचल रहनि। बुझल गेलो रहै जे हारि-थाकिकेँ ओकरा पुनः एहि कुर्सीक शरण लेबहि पड़तैक।

मास्टर साहेब एहि छक्का-पंजासँ अभिज्ञ नहि छलाह। नोक जकाँ बूझल रहनि जे थाना होअय की ब्लाक, कचहरी होअय की सचिवालय, विद्यालय होअय की विश्वविद्यालय, थाना होअय की अस्पताल—सभ ठाम कार्यालय बीहड़ि बनल छैक जाहिमे भ्रष्टाचारक मनियार चुनिया कुंडली मारने बैसल छैक। भ्रष्टाचार सम्यक रूपसँ प्रायः प्रत्येक मनुक्खक हाड़मे संस्कार बनि पैसल छैक। एहन स्थितिमे जिम्मरक पात (एक नम्बरक पासपोर्ट) देखौने बिना क्यो त्राण नहि पाबि सकैछ। जतऽ जाउ—पाइ... पाइ... पाइ... देखालक पजेबा-पजेबा पाइ लेने डिरिआइत रहैत छैक...।

अन्तः कार्यकेँ सिद्ध करबा लेल मास्टर साहेब सभ जोग-टोन करबा लेल तैयार ठाढ़ छलाह। देह-हाथसँ मजगूत रहितो पाइ-कौड़ीक मामिलामे दुब्बरी झा बनल छल। पथरकनहसँ माथक टीक धरि 'अकिलक एकमुखी रुद्राक्ष' गछारने रहै। मुदा गरजितक घेघ कखनो-कखनो ओकरा कुदकबा दैक। घेघ रहै—अपने बेटी! बेटीक कन्यादान, घेघ बनि गेल रहै ओकरा लेल। ने तँ सरबा किरानीक ई मजाल जे ओकरा घुरछी कटबितै! एकरा तँ चुटकीमे नोसि बना कऽ सुड़कि लितैक!

अत्यधिक क्रोध सँ ओकर आवाज काँपि रहल छलै—"नोकरी भेलाक बाद होइक जे हाकिम भऽ गेलहुँ...? तीन दिनसँ फिफिआयल फिरै छी आ अहाँकेँ एतबो विवेक नहि जे कमसँ कम हमरो काज दिस ध्यान दी?"

अपना प्रति एहन आरोप सुनि किरानी बाबू तनि गेलाह—'ई काज हमरा घरक भऽ रहल छै? बूढ़ि जकाँ पें-पें कयलासँ किछु नै हैत। एतऽ जबानी जमा-खर्च नै चलै छै। अहाँकेँ जे कहबाक अछि, से लिखित साहेबकेँ दियनु। हुनकर जे आदेश हेतनि, सैह हम करब...!"

—"से तँ ठीक, मुदा हम कैक टा दरखास्त पहिनहि दऽ चुकल छी। अहाँ कहै छी, जे हमरा लग अछिए नै...।"

—"एकर मतलब हम फूसि बहै छी?"

—"फूसि अपने किएक कहब! प्रश्न छै जे, तखन दरखास्तकेँ अकास गीरि गेलै वा नहि तँ ओकरा पाँखि जनमि गेलै।... कलियुगमे तँ किछुओ ने भऽ सकैयऽ यौ?"

—"हमरा मारिते काज सभ अछि। मगन नै खाउ। साहेब अपन कक्षमे माछी मारैत होयताह, सङ्ग दियौन जा कऽ।"

—"कथी लेल उक्खड़िमे मूड़ी दिआबै छी। समाठक डरसँ लगही-नदी बहार होमऽ लगैत अछि। अहीं कनेक मेहनत कऽ दिऐक तँ हमर बेड़ापार भऽ जायत।" मास्टर साहेब किरानी बाबूक कान लग मुँह लऽ गेलथिन—"जे कहब हम तैयार छी।"

किरानी बाबूक ब्लड प्रेसर तीव्र भऽ गेलनि।

—"हम अहाँसँ भीख मँगै छी यौ?"

—"लियऽ... मुँहमे तँ जाबी लगा रहैत छी। की उतारा देब। हमहूँ एक टा सरकारी स्कूलमे छोट-छीन मास्टर छी। आफिसक काज कोना होइ छै से हमरो नीक जकाँ बूझल अछि... हम तँ मात्र 'ग्रीन सिगनलक' प्रतीक्षा कऽ रहल छी। अपने हमरा लेल एतेक श्रम करबै आ तँ हम अधम किछु 'पान-फूलक' सेवा कऽ देब तँ हमरा बुझने ई कोनो संशय अपराध नै हेतैक। ओना, अपने जे बुझिएै।"

गिरगिट आ किरानी बाबू—रंग बदलैमे एक भऽ गेलाह। चपरासीकेँ आदेश देलथिन—"कतौसँ कोनो कुर्सी खाली होअय तँ लऽ आनू। बेचारे बड़ी कालसँ ठाढ़ छथि।"

मास्टर साहेब आदमी काजक बुझना गेलनि। ऊपरसँ जतबे चमरचिट्ट, भीतरसँ ततबेक बुधियार! आँखिक चश्मा उतारि बेचारे धऽ देलनि आ मास्टर साहेबसँ प्रेम-निवेदन कयलनि—"अपनेक नाम?"

—"हम्मर नाम?... देवदास चौधरी एक गोट मिडिल स्कूलमे सहायक शिक्षक छी!"

—"ओऽऽऽ कतऽ?"

मास्टर साहेब ओहि स्थानक अता-पता कहि, अपन बीस बरखक मास्टरी जीवनक गाथा प्रस्तुत करऽ लगलाह। ताबे तक चपरासी एक गोट बेतक कुर्सी माथपर उठौने आयल।

—"ठाढ़ किएक छी। कुर्सीपर बैसि जाउ। किरानी बाबू कनडेरियो आँखिसँ ताकि देलाह तँ बुझबजे काज सोलह आना सिद्ध भऽ गेल।" चपरासी ई कहिकातक स्टूल धऽ लेलक।

आत्मप्रशंसा सुनि, किरानी बाबू फूलि कऽ कुप्पा भऽ गेलाह। माथ कुड़िअबैत पुछलथिन—"देवदास जी?"

प्रत्युत्तरमे मास्टर साहेब हँसऽ लगलाह। मुँहक पीयर दाँत बहार भऽ गेलनि। दिन भरिक झमार सेहो चेहरापर फराके रहनि। गमछासँ मुँह पोछि, किरानी बाबूक प्रसन्नताकेँ ओढ़ि लेलनि—'देव तँ अपने छी प्रभु! ई अकिञ्चन तँ मात्र दास अछि।

विनती एतबक जे कहुना हमरा त्राण भेटि जाय जे सँझका ट्रेन पकड़ि कऽ गाम चलि जाइ। गाममे पाहुन-परक सभ आयल छथि। ओना, एतऽ रहै-सहैमे भारी तकलीफ होइए।"

—"से त होइते होयत।" किरानी बाबूक अवाज पिघलैत गरक चासनी जकाँ चूबऽ लगलनि—"बस, ई कहू तँ जे काज कोन टाइपक रहै?"

—"वैह, जनम-तिथि संशोधनवला।

मास्टर साहेबक कहैक टोन तेहन रहनि जे ना किरानी बाबूके एतद्विषयक सभ जनतब पहिनेसँ होनि।

किरानी बाबू—"बूझि गेलहुँ। कनेक थमहू। अहाँक फाइल तकै छी।"

मास्टर साहेब हुनके संग कुर्सी छोड़ि ठाढ़ भऽ गेलाह। किरानी बाबू अलमीरा खोलैत रहथि कि ओ किछु खानगी कानमे उझीलि देलनि—"अपने स्तरसँ कऽ दितिएक! कथी ले' हमरा लटारहममे देब। अहाँ हमर जिनगीक रक्षा-कवच बनि जाउ...जे कहब...।"

किरानी बाबू फाइलक अम्बारसँ एकगोट बेसभरिगर फाइल निकालि कऽ लगलाह उनटि-पुनटि कऽ पढ़ऽ।

ता धरि मास्टर साहेब कनहापर टाँगल थैलीसँ तनेझोरासँ किछु कागत पत्तर बहार करैत बजलाह—"हैं, हैया देखियौ, असली कागज-पत्तर तँ हमरा लग अछि। सभमे जनम-तिथि एक्के छैक। आफिसक रजिस्टरमे गलती चढ़ि गेल अछि। ओहि गलतीक सुधार करयबाक अछि।"

खूब नोक जकाँ हियासिके देखलाक बाद किरानी बाबू बाजि उठलाह—"हमर रजिस्टरमे गलती चढ़ल अछि की अहाँ अपन कागज-पत्तर उनटा-पुनटा कऽ लेलहुँ—ओना कोना बूझल जायत।"

समस्याक जटिलता मास्टर साहेबके गम्म कऽ देलकनि।

—"अहाँक परीक्षावेदन पत्र तँ अहींक हाथक भरल होयत ने?"

कटघरामे ठाढ़ अपराधी जकाँ मास्टर साहेब चुप छलाह। किरानी बाबू 'मौन स्वीकारोक्ति' बूझि पुनः दोसर प्रश्न कयलनि—ओहिमे जे जनम-तिथि अंकित होयतैक, तकरा त प्रामाणिक मानबै ने?"

मास्टर साहेबक चेहरा पीयर-कपीस भऽ गेलनि। जवाबमे कहऽ पड़लनि—"ओकरा जँ प्रामाणिक मानबै तँ जुलुम भऽ जायत हमरा लेल। डाका पड़ि जायत!! छः मास बाद हमरा रिटायर कऽ देत..!"

—"रिटायरबला उमेर भऽ गेल तऽ अहाँके बैसा कऽ कतऽसँ दरमाहा देत सरकार?"

—"से नै कहियौ। एखनै हमरे [illegible] दाँत टूटल [illegible] पाकल जे हम रिटायर भऽ जाइ? जकर दाँत झखड़ि गेलै, अखनहु हाथ नै सुझै छैक, कोकनल दाढ़ि जकाँ कोखन धारीशायी भऽ जायत, तकरो दसबरख सर्विस बाँकी छै—एहन स्थितिमे अहाँक यैह निसाफ???"

किरानी बाबूक हृदय द्रवित भऽ गेलनि—"हमरा निसाफ करबाक तागति कहाँ अछि! निसाफ तँ हाकिम-हुकामक हाथक खेलौना थिकै। ओ चाहथि त रातिके दिन कऽ सकै छथि आ दिनके राति! प्रश्न अछि जे ओहो तऽ अन्ततः आधारे चाहता। हम कोन आधार पर हुनका लग पैरवी लऽ जाउ जे अहाँक जनम-तिथिमे अपेक्षित संशोधन कऽ देथि? ओ हमरा हाकिम छथि। हम हुनकर हाकिम नै छियनि!!"

—"हम त मोटामोटी यैह बूझै छी जे अपने जे करबै, सैह हैत....।"

कलपैत मास्टर साहेब अपन हाथ किरानी बाबूक पयर दीसि बढ़ौलनि—"एहि शरण गतदीनार्त्तके परित्राण करब अपन धर्म बूझियौ। आर की कहब!"

एहि नाटकीय प्रकरणके, कार्यालयक आनो सहायक सभ लक्ष्य करऽ लागल।

मास्टर साहेबक हाथ पकड़ैत किरानी बाबू बजलाह—"ई की करै छी? कार्यालयक कोनो मर्यादा होइ छैक। एहि तरहक व्यवहार हम 'टॉलरेट' नै कऽ सकै छी। अहाँ आॅफिसके बनियाक दोकान तऽ ने बूझि लेलिएक जे चटसँ दू पाइक नोन आ दू पाइक हरदि दऽ दी?"

फाइलके छोड़ि, किछु काल धरि किरानी बाबू गम्भीर हँसीमे बाझल रहलाह पुनः प्रकृतिस्थ होइत बजलाह—

"अहाँक जनम-तिथिमे एक दू-दिनक नै, पूरा पूरी दस बरखक अन्तर पड़ि रहल अछि। भरि जिनगी घोड़ा बेचिकऽ सूतल रहलहुँ, जखन रिटायरक टाइम भेल, त चट्टदऽ बोर्ड आॅफिस दौगल अयलहुँ...आ एतो घोड़ा पर चढ़ि कऽ आयल छी, हाथी पर चढ़ि कऽ भागक कार्यक्रम अछि....हड़वा छूबऽवला काज नै थिकै मास्टर साहेब! प्रस्तुत मामलाक आधारपर हम अपनेक आवेदन प्रशाखा प्रभारीके बढ़बै छियनि। ओ अपन टिप्पणीक सङ्ग फाइल प्रशाखा पदाधिकारीके पठौताह। ओतऽसँ फाइल सचिव महोदय लग जायत। सचिवक निर्णय पक्ष-विपक्ष दुनूमे भऽ सकै छ।"

मास्टर साहेबके अपन आत्मशक्ति घटैत बुझना गेलनि। सोचलनि, डाँड़ो सकत कयलहुँ तँ आब ई पिंगल पढ़ाबऽ लागल अछि—प्रशाखा प्रभारीसँ प्रशाखा पदाधिकारी—प्रशाखा पदाधिकारीसँ सचिव आ [illegible] पुनः सभ दरबज्जा होइत किरानी बाबू! चाहे किछु होअय, काज तँ यैह सरबा करत। एकरे मनबाक चाही मुदा ओ तऽ नाक पर माछी बैसै ने देबऽ चाहै अछि।

मेमियाइत स्वरमे मास्टर साहेब कहलथिन—"जँ अपने फाइल परबसिकऽ रगड़ि दितिएक।"

—"फेर वैह बताह जकाँ गप्प! कोना कसि कऽ रगड़ि दिऐक?"

मास्टर साहेब पहिनेसँ एक सए टाका मोड़ि कऽ हाथमे नुकौने छलाह। टेबुलक तरदऽ कऽ हाथ बढ़ौलनि—"एकरा राखि लीयऽ।"

यन्त्रवत किरानी बाबू टाकाके जेबीमे घोंसिया लेलनि—"रिपोर्ट हम अहाँक फेभरमे लीखि दैत छी, मुदा हाकिम जँ आधार तकता तखन? मासो नै पुरलैए ज्वाइन कयना। खासकऽ जनम-तिथिवला मामिलाके ओ अपने फरिछाबै छथि। जावत धरि पूर्ण विश्वस्त नहि भऽ जयताह, फाइल 'परामर्शक' कफन ओढ़ि प्रेत जकाँ एहि टेबुलसँ ओहि टेबुल दौड़ैत रहत। ओतऽ जँ खूब कसगर पैरवी पहुँचा सकी...!"

मास्टर साहेब बीचेमे गप्प लोकि लेलथिन—

—"ओतुका पैरवी हम अहीं नै [illegible] ओ भार हमरा पर छोड़ि दीयऽ।"

कार्यालय बन्न होइमे किछुए काल बाँकी रहै। अनेरबा बहस-जिरहमे बहुतो काज पेन्डिंग रहि गेलासँ मोनमे खौंझा उठि रहल छलनि। आॅफिसमे ताला लगा कऽ बहार होइत रहथि कि मास्टर साहेब पछोड़ धऽ लेलकनि। चाहक दोकान धरि पाछू-पाछू छाँह जकाँ चलैत रहला।

किरानी बाबूक मोन घोर रहनि। [illegible] पाछू घूरि कऽ दुनू हाथ जोड़ि लेलनि—"हमर अपन व्यक्तिगत समय थिक। [illegible] घरो-परिवारक विषयमे हमरा सेहो [illegible] देब, की नहि?"

—"तँ हमरा की आज्ञा होइ छैक?"

—"एक बेर तऽ कहलहुँ जे परसू साँझ धरि अहाँक फाइल हाकिम लग पहुँचि जायत। परसू कोनो बेर भेट कऽ लियनु।"

—"हम चाहै छी जे फाइल [illegible] हम स्वयं हुनकासँ साक्षात्कार करी।"

किछु काल धरि सुखायल ठोरपर आँगुर फेरैत, किरानी बाबू गुम्मधुम्म रहला। ओ उत्तर देलथिन—'बेस, परसू फाइल हम अहींक हाथमे दऽ देब, मुदा ककरो ई बात ज्ञात नै होइक।"

किरानी बाबूके एहि बातक लेल आश्वस्त कऽ सचिव महोदयक डेराक पूर्ण अता-पता लगा लेलनि।

सचिव महोदयके क्वार्टर भेटल नीक रहनि। अस्थायी रूपसँ होटलमे रहैत छलाह। किरानी बाबू अहि डेरा [illegible]

शेष पृष्ठ २१ पर

(पृष्ठ १९क शेषांश)

ने हुअएसँ रातिमे वा भोरमे नीक जकाँ गप्प भऽ सकत ।

दौड़गोलेल मास्टर साहेबकेँ दू दिनक समय भेट गेल रहनि । ओ चहुँ ओर अपन दृष्टि दौड़ाबऽ लगलाह....

एहि दू दिनक अन्तरालमे मास्टर साहेबकेँ किरानी बाबूसँ घुट्ठ-घट्ठ भऽ गेल रहनि । फाइल प्रोग्रेसक नियमसँ होइत जखन साहेब लग जायब, कममे रहैत तँ प्रशासकीय अधिकारीक कार्यालयसँ सम्बद्ध फाइल किरानी बाबू प्राप्त कऽ ललनि आ मास्टर साहेबक माध्यमसँ सचिव महोदय लग पठा देलथिन ।

तेसर दिन.... होटल अनारकली पहुँचि गेलाह मास्टर साहेबकेँ ज्ञात भेलनि जे सचिव महोदय दुमहला पर फलाँ रूम नं० मे ठहरल छथि । नेपाली गोरखा ड्यूटीपर बैसल रहैत ।

बड़ी कालसँ धरना देलोकसभ जखन बाहर आबि गेलाह तँ मास्टर साहेब, नेपाली गोरखाक इशारा पाबि, परदा हटा कऽ भीतर प्रवेश कयलनि ।

--"की बात अछि ?" प्रणाम करिते साहेब पुछलथिन ।

--"एकटा फाइल रहै!" आ फाइल हाकिमक सोझाँमे दैत मास्टर साहेब भयाक्रान्त मुद्रामे सामने पड़ल कुर्सीपर बैसि गेलाह । मास्टर साहेबक हाथमे आँफिसक फाइल देखिते हाकिम धीपल लोह भऽ गेलाह ।

बड़ी काल धरि फाइल पढ़ैत रहलाक बाद हाकिम कहलथिन--"ई मामिला हमरा संदिग्ध बुझना जाइत अछि ।"

"हमरा सभ सन्देहक अमोघ औषधि छिकै सरकार!"

"अहाँक मतलब नहि बूझल ?".

मास्टर साहेब हँसैत बजलाह--

"तापकजन द्वौ बन्धु है, इन्हे सम्भालो करो, (नाँक कटे का मंत्र है, कलम कटे का अन्त--

ई हम नै, हमर नाना कहै छलथिन सरकार ओ कलक्टरक पेशकार छलाह । मुइला आइ बीस-बाइस बरख होइत छथि ।

"अहाँ फकरा खूब जनैत छी ?"

"आशीर्वाद अपनेक! किरपा होअय तँ भरि राति सुना सकै छी । अपने अकच्छ भऽ जायब, मुदा हम नहि थाकब!"

"वाह!"--हाकिमक चेहरा गम्भीर भऽ गेलनि--"हम एहि मामिलाके जनम तिथि संशोधन समितिमे राखि दैत छी । जखन करिछा त राय तँ एकर सूचना अपनेके डाक द्वारा प्रेषित कऽ देल जायत तदुपरान्त अगिला कारवाइ करब...."

मास्टर साहेबक शरीरमे अचानक कोनो दैवी शक्ति प्रवेश कऽ गेलनि । बजलाह--"तखन तँ हम मरि जायब सरकार।"

"मरू वा जीबू, एहिसँ बोर्डके की मतलब छै? मुदा हम बिना कोनो आधारक अण्ट-शण्ट किछु लीखि दी, से आशा हमरासँ जुनि करू।"

हाकिमक आँखि चढ़ि गेलनि । अपन अन्तिम निर्णय लिखलासँ पूर्व ओ पुनः एक बेर फाइल पढ़ऽ लगलाह--"जँ आधार नहि रहत, तँ हम की? कयो किछु कऽ सकै छ ।"

मास्टर साहेब बजलाह--"आधार छै सरकार!"

हाकिम दाँत पीसैत बजलाह--"सारा फाइल उनटि-पुनटि देलहुँ। किरानी बाबूसँ सेक्शनल आँफिसर तक सभक नोट पढ़लहुँ--हमरा तऽ कतौ आधारे ने भेटल ।"

मास्टर साहेबक ठोर पर रहस्यमय हँसोक किरण छिटकि गेलनि--"बड़ पैघ आधार छैक सरकार...."

--"सैह तँ हम देखऽ चाहैत छी।"

मास्टर साहेबक उक्तिसँ हाकिमक पझाएल चेहरा जेना धह-धह जड़ऽ लागल। नाटकीय ढंगसँ बजलाह--"ठीके बड़ बूड़ि छी अहाँ एहि कागजकेँ बुझबैक हम की अहाँ?"

--"हमरा बुझने की हेतै । अपने हाकिम भेलिऐ ।"

चेहरापर बुद्धदेवक शान्ति धारण कयने मास्टर साहब प्रत्युत्तरमे चुटकी बजौलनि--"कनेक नजरि उठबितिऐक!"

आ, हाकिमक सूर्य सन दीप्त आँखिमे अचानक चन्द्रमाक शीतलता भरि गेलनि एक हाथसँ पर्दा कऽ आधा हटौने, अभिसारिकाक मुद्रामे एकसरि ठाढ़ि अप्सरा सन दिव्य सुन्दरी। ऊपरसँ नीचा धरि कोनो अंग एहन नहि, जाहिमे सुन्दरताक पराकाष्ठा नहि झलकैत होइ। ब्रह्माक मानसिक सृष्टि सारूपा जकाँ ।

--"यैह थिकी हमर आधार सरकार!"

ई कहैत मास्टर साहब निश्चिन्तताक निश्वास छोड़लनि। हाकिम इन्द्रजालमे फँसि चुकल छलाह। ओ जेबीसँ एक गोट लवंग निकालि, ओकर फूलकेँ अपन दाँतसँ नोचैत बजलाह--

"ठीके, बड़ पैघ आधार अछि।.... जाउ, काल्हि भोरे किरानी बाबूके अपना सङ्ग कयने आयब।"

चलबसँ पूर्व मास्टर साहेब कहलथिन--"कहै छलहुँ ने सरकार! आधार छैक बड़ पैघ आधार छैक!"

अप्सरा रूप कोठलीमे प्रवेश कऽ गेल आ ओर मास्टर साहब कोठलीक बाहर निकलि गेलाह।

नीचाँ उतरैत काल सीढ़ीक दुनू दिस लोहक रेलिंग बनल रहै तथापि मास्टर साहेबके कोनो आधारक आवश्यकता नहि बुझना जा रहल छलनि ।

परीक्षा विभाग (गोपनीय) संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ।

(पृष्ठ १४क शेषांश)

जा कऽ राजकुमार अभिवादन कयलक से प्रसन्न भऽ सभ एकरा सुवर्ण मुद्रा इनाम देलक। एक व्यक्ति सुन्दर जूता आ दोसर व्यक्ति अपन घोड़ा देलकैक। सभ लऽकऽ ई विनम्र बनल रहल। आब ओ सभक सेवामे तत्पर रहऽ लागल । आगन्तुक व्यक्ति सभ राजकुमारकेँ पुछलक--

"हे अपरिचित व्यक्ति, अहाँ के छी आ एतऽ किएक आयल छी?"

राजकुमार अपन परिचय देबऽ लागल--"मिस्र देशक महान शासकक एकमात्र रथीक पुत्र छी। हमर माय मृत्युक बाद हमर पिता एक आन स्त्रीसँ विवाह कऽ लेलनि। सतमाय हमरासँ घृणा करैत अछि। तेँ हम घर छोड़ि कऽ भागि आयल छी। एतऽ हमर एक धर्मशाला अछि जतऽ कठिनतासँ अपन निर्वाह करैत छी।"

सभ व्यक्ति राजकुमारक गरीबीसँ दयार्द्र भऽ कऽ अनेक आभूषण देलक। स्वर्णाभूषण आ धन लऽ कऽ राजकुमार धर्मशालामे आबि गेल। एहि रूपेँ धीरे-धीरे ओकरा लग धन बढ़ऽ लागल आ ओकर अपन रंग-ढंग सेहो बदलि गेल। आब सुख रहऽ लागल। ओ चतुर छल। चुपचाप ओ भारतीय व्यापारीसँ बघनख कीनि लेलक। बाघक चाममे बनल जूता लऽ आ खरगोशक चरबी लऽ कऽ अपन शरीरमे मालिश कयलक। आ एक दिन भोरे ओहि पहाड़ लग जा कऽ राजकुमार सभ लग जा कऽ विनीत स्वरमे मीनारपर चढ़बाक अनुमति माँगऽ लागल।

(क्रमशः)

Scanned with CamScanner

एकपहिया साइकिल

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

"हम जेहन जिनगीकेँ–
एखन धरि खेपलहुँ अछि
से कोनो सर्कसकेर एकपहिया–
साइकिल थिक ।

पैंडिल तँ छैक, मुदा
हैंडिलकेर पत्ते नहि,
सीट लचकदार, मुदा
ब्रेक तथा घंटी ले' स्थानेक अभाव छैक ।
चलवा ले' सड़क, मुदा
भीड़-भाड़-भरल, व्यस्त
बाट चलनिहारकेँ तँ चलबोकेर लूरि नहि ।

साइकिलकेर सन्तुलन शरीरेपर निर्भर छै'
तैयो जँ ट्रक तरमे एखन धरि–
पड़लहुँ नहि,
बूझै छी पुरबिलकेर पुण्य कोनो कयल अछि"
बाटे-बाट, ठाढ़े-ठाढ़, टोका नमस्कारेपर
कहने रहथि ओहि दिन
बेहाल—हमर नेताजी ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

Scanned with CamScanner